Date
21/08/20

न्याय - दर्शन

गौतम या गौतम मुनी जो अक्षपाद नाम से भी जाने जाते है। प्राचीन न्याय के प्रवर्तक आचार्य है, न्याय का अर्थ है प्रमाणों द्वारा तत्व परीक्षण। यह प्रमुख रूप से तर्कशास्त्र और ज्ञानमीमांसा है गौतम के न्यायसूत्र पर वात्स्यायन का न्याय भाष्य है।

नव्य न्याय के प्रवर्तक मिथिला के आचार्य गंगेश उपाध्याय की युग-प्रवर्तक कृति तत्वचिंतामणी से आरंभ हुआ। जयन्त भट्ट की न्यायमंजरी भी प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण ग्रंथ है, उदयन के ग्रंथों में न्यायकुसुमाञ्जलि और आत्म तत्व विवेक अत्यंत प्रसिद्ध मौलिक ग्रंथ है।

न्याय और वैशेषिक

i) न्याय तथा वैशेषिक दर्शन परस्पर सम्बद्ध है तथा समान तन्त्र कहे जाते है, वैशेषिक में तत्व मीमांसा प्रधान है। न्याय में तर्क शास्त्र और ज्ञान मीमांसा का प्राधान्य है।

ii) वैशेषिक में सप्त पदार्थ तथा परमाणुवाद के विवेचन द्वारा तत्व निरूपण किया गया है।

प्रमेय में ही - सकल पदार्थ आते है

बौद्ध और वैशेषिक दो प्रमाण
प्रत्यक्ष और अनुमान

viii) शब्द एवं उपमान को अनुमान के अन्तर्गत मानता है न्याय ने प्रत्यक्ष और अनुमान, शब्द और उपमान इन चारों को प्रमाण कोटी में स्वीकार किया है।

ज्ञान - मीमांसा

(1) न्याय कट्टर वस्तुवाद है वह ज्ञान को ज्ञाता और ज्ञेय का संबंध मानता है बिना ज्ञाता और ज्ञेय के ज्ञान उत्पन्न नहीं हो सकता, जब आत्मा या ज्ञाता ज्ञेय के सम्पर्क में आता है तो उसमें ज्ञान नामक गुण उत्पन्न होता है, आत्मा ज्ञान का आश्रय है तथा ज्ञान आत्मा का आगन्तुक धर्म है। ज्ञान का कार्य ज्ञेय पदार्थों को प्रकाशित करना है, जिस प्रकार दिपक सन्निकटस्थ वस्तुओं को प्रकाशित करता है उसी प्रकार ज्ञान अपने सम्मुख उपस्थित पदार्थों को प्रकाशित करता है। जब ज्ञाता ज्ञेय पदार्थों के सम्पर्क में आता है तब ज्ञेय पदार्थ द्वारा ही ज्ञाता में ज्ञान नामक गुण उत्पन्न किया जाता है। जिससे ज्ञेय पदार्थ ज्ञेय के रूप में प्रकाशित होता है। अतः बिना ज्ञेय पदार्थ या विषय के ज्ञान उत्पन्न नहीं हो सकता।